कला के प्रयोजन

कला के प्रयोजन बहुत से माने गए हैं। आचार्य द्विवेदी जी ने कला के दो प्रयोजन बताए हैं। एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म। उन्होंने लिखा है "कला का यह प्रयोजन तो है ही कि वह मनुष्य को मनुष्य बनाएं। उसे सामान्य धरातल से ऊपर उठाएं। मनुष्यता को उदबुध्द करने के महान उद्देश्य से निर्मित कला ही श्रेष्ठ कला है। जो इससे छोटे उद्देश्य को सामने रखकर सामने आए उसे हम कला नहीं कह सकते।" जो कला स्वार्थ सहयोग में ही विश्रांत हो जाए, इससे आगे न बढ़ सके, उसे कला मानना ही नहीं चाहिए। कला वह है जो जड़ उपभोग की प्रवंचना से बचकर परमानंद में मनुष्य को लीन कर दे।

अधिकांश विद्वानों ने कला के अनेक प्रयोजन बताए हैं लेकिन उनमें नौ ही अधिक प्रख्यात है। जो निम्नानुसार है -

1) कला कला के लिए
2) कला जीवन के लिए
3) कला जीवन से पलायन के लिए
4) कला जीवन में प्रवेश के लिए
5) कला सेवा के लिए
6) कला आत्मानुभूति के लिए / कला आनंद के लिए
7) कला यश और अर्थ प्राप्ति के लिए
8) कला उपदेश के लिए
9) कला सृजन की अदम्य आवश्यकता - पूर्ति के लिए

ये सब प्रयोजन एक दूसरे से नितांत भिन्न नहीं है फिर भी इन में दृष्टिकोण की भिन्नता है। इन पर हम अलग-अलग संक्षिप्त रूप से विचार करेंगे।

1) कला कला के लिए : --

कला कला के लिए इस सिद्धांत का जन्म 19वीं शताब्दी के अंत में फ्रांसीसी साहित्य में हुआ इसके प्रमुख प्रवर्तक ऑस्कर वाइल्ड नामक विद्वान माने जाते हैं इस दृष्टिकोण को या वादक मानने वाले आचार्यों का कहना है कि साहित्यकार उपदेश देना चाहता है नव जीवन जीने के लिए उपयुक्त बातों को प्रस्तुत करना चाहता है और ना ही काव्य को धर्म प्रचार का साधन बनाना चाहता है। साहित्यकार केवल अपने विचार या अनुभव स्वच्छंद रूप से प्रस्तुत करता है उसके लिए कोई बंधन नहीं कोई सीमा नहीं रहती तभी तो वह कला का विकास कर सकता है।

कला कला के लिए इस दृष्टिकोण में विशेषता कवि का काव्य व्यक्तित्व ही अधिक चमक उठता है। इसी कारण तो हमें कविता में या साहित्य में नए-नए अनुभव कल्पनाएं तथा विविध विचारों की प्राप्ति होती है।

कभी-कभी केवल कला के लिए काव्य निर्मिति कवि द्वारा की जाती है लेकिन पढ़ते वक्त पाठकों को इस कविता से प्रेरणा और शिक्षा की प्राप्ति होती है तब कवि का उद्देश्य प्रेरणा या शिक्षा देने का नहीं होता। कवि तो केवल कला की दृष्टि से कविता लिखता है।

2) कला जीवन के लिए : --

कला का उदय मनुष्य जीवन के लिए हुआ। उसका उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं वरना उसे दिशा देना भी है। वह जीवन में जीवन डालती है और वह जीवन को जीवन योग्य बनाकर उसे ऊंचा

उठाती है। वह जीवन में नए आदर्शों की स्थापना कर उनका प्रचार करती है और हमारे जीवन की समस्याओं पर नया प्रकाश डालती है।

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास प्रायः जीवन के लिए ही लिखे गए हैं। प्रगतिवाद का प्रयोजन भी ऐसा ही है किंतु उसमें वर्ग संघर्ष की भावना अधिक है। 'रामचरितमानस" यद्यपि स्वांत सुखाय लिखा गया है तथापि कला जीवन के लिए है ही। उसने जीवन को उठाने का प्रयास किया है।

अतः हम कह सकते हैं कि कला और जीवन का अटूट संबंध है। जीवन का विकास और उत्कर्ष करने में कला का योगदान महत्वपूर्ण है इसीलिए तो कला की प्रेरणा, व्यापकता बढ़ती जा रही है। चिंताग्रस्त और उदास लोगों को प्रयत्न करने की प्रेरणा कला एवं काव्य में रहती है। इतना ही नहीं काव्य जीवन को प्रेरणा देता है। आदर्श और यथार्थ जीवन का चित्रण कला जीवन के लिए इस दृष्टिकोण में आता है। मतलब यह कि इस दृष्टिकोण में कविता केवल जीवन विकास तथा उत्कर्ष के लिए होती है।

3) कला जीवन से पलायन के लिए : --

कला जीवन से पलायन के लिए यह वाद भी कला जीवन के लिए का एक अंग ही माना जाता है। क्योंकि जीवन से पलायन जीवन का एक अंग ही है। कभी-कभी हम जीवन के कटु व्यवहार से उबकर, तंग आकर थोड़ी सी शांति प्राप्त करने के लिए कला या काव्य का सहारा लेते हैं अर्थात जीवन की तीव्रता और अभाव से मनुष्य का जो दम घुटने लगता है तब मनुष्य कला एवं काव्य के इस जगत में प्रवेश करता है जहां उसे किसी प्रकार की तकलीफ नहीं मिलेगी। अभावग्रस्त आता नहीं होगी और ना ही परेशानी होगी।

जो कुछ वह कला द्वारा प्राप्त करता है वह जीवन की सुखद झलक होती है। जीवन की सुंदरता होती है इसलिए तो तुलसीदास ने रामकथा पर आधारित 'रामचरितमानस' लिखा। प्रेमचंद ने आदर्शवाद को अपनाया। सारांश यह की पलायन में कवि यथार्थ जीवन से उबकर आदर्श जीवन में प्रवेश करता है। यथार्थ जीवन के बदले में वह काल्पनिक जीवन का चित्र अपनाने लगता है।

कला जीवन से पलायन के लिए इस मत को मानने वाले लोग प्रायः ऐसे ही होते हैं जो संसार की विषमताओं और कर्कशताओं का सामना करने की शक्ति नहीं रखते अथवा जीवन के संघर्ष में पराजित हो जाते हैं । वह काव्य और कला को एक सौरभमय आश्रय - भूमि के रूप में मानते हैं। ये लोग सोचते हैं कि दुनिया का सुधार हमारे बस का नहीं उसके संघर्ष में पढ़कर हम क्यों अपनी शांति भंग करें। कला के विश्राम दायिनी गोद में बैठ कर क्यों ना अपने दुख तथा संसार को भुलाया जाए। प्रसाद की

निम्न पंक्तियां इसी पलायन वाद का परिचय देती है--

"ले चल वहां भुलावा देकर,
मेरे नाविक धीरे धीरे। "

4) कला जीवन में प्रवेश के लिए : --

कला का उद्देश्य जीवन को पीठ दिखाकर भागना नहीं वरना उसके द्वारा जीवन के गहन वन में प्रवेश कर उसमें सौंदर्य के दर्शन करना है। जो संसार के रुदन और काली रात से भागता है वह उसके हास की चंद्रिका से वंचित रहता है। सच तो यह है कि काली रात में भी एक विशेष सौंदर्य है। कविवर पंत पृथ्वी के कण-कण में सौंदर्य देखते हैं---

"इस धरती के रोम रोम में
भरी सहज सुंदरता,
इसकी रज को छू प्रकाश
बन मधुर विनम्र निखरता।"

कलाकार हमारे जीवन के सौंदर्य पक्ष का उद्घाटन कर हमको उसमें अनुशक्ति प्रदान कर उसके प्रति प्रयत्नशील बनाता है सूर की सबसे बड़ी देन यही थी कि उन्होंने जीवन के सौंदर्य और मधुमय पक्षों को हमारे सामने रखा है जिससे कि जीवन के प्रति हमारी आस्था बढ़े और हम उसके संरक्षण तथा उसको संपन्न बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें।

5) कला सेवा के लिए : --

टॉलस्टॉय इस्मत के समर्थक थे।सेवा जीवन का मधुर पक्ष है। सेवा द्वारा मनुष्य ऊंचा उठता है। अस्पतालों में मरीजों को कविता सुनाना, संगीत सुनाना, यह कला का सेवा पक्ष ही है। चित्र द्वारा भी समाज सुधार संबंधी बहुत कुछ सेवा कार्य किए जा सकते हैं। कला का यह मानवीय पक्ष है। कला के द्वारा मानवता की सेवा करना और सद्भावना का प्रचार करना, यह प्रचारवादी और नैतिक दृष्टिकोण है। कला से तो सेवा होती ही रहती है। कलाकार स्वयं अपने युग की आवश्यकता के अनुसार अपनी चेतना में कोई मानव सेवा का सिद्धांत आंगीकार करता है। ऐसी दशा में स्वभावतः वह उसकी कृति में प्रतिबिंबित होगा। परंतु सेवा का उद्देश्य लेकर बैठने से कला की उत्कृष्टता में बाधा पड़ेगी। प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास के भीतर जो कलात्मक सफलता और प्रभाव है वह उद्देश्य और आदर्श को प्रधान बना कर लिखे गए अन्य उपन्यासों में नहीं है।

6) कला आत्मानुभूति के लिए / कला आनंद के लिए

यह मत भारतीय आदर्श के निकट है। कला द्वारा आत्मानुभूति में सहायता मिलती है। कला में हम अपने भावों का मूर्तिमान देखकर एक प्रकार से अपनी आत्मा के दर्शन ही करते हैं। उसमें हमको आत्मानुभव का आनंद मिलता है। वह 'सद्य: परिनिवृत्तये' के निकट आ जाता है। आनंद मन को व्याप्त कर लेता है और सृष्टा के संबंध में यह रस के बहुत निकट है। वह सृजन की अदम्य आवश्यकता को जन्म देता है।

इस वाद में काव्य एवं कला का मुख्य उद्देश्य आनंद या मनोरंजन ही रहता है इसलिए तो कोई भी विधा जब हम पढ़ते हैं तो हमें आनंद की प्राप्ति होती है।

7) कला यश और अर्थ प्राप्ति के लिए : --

किसी साहित्यिक रचना से साहित्यिक को यश तथा प्रसिद्धि मिलती है। यदि कोई रचना सरस एवं उच्च कोटि की हो तो सभी उसकी प्रशंसा करते हैं। अपनी कला या साहित्य के माध्यम से कलाकार / कवि एक प्रकार से लोगों के निकट आ जाता है। उदाहरणार्थ - तुलसीदास, प्रसाद, कालिदास, प्रेमचंद इन्होंने अपने-अपने काल में अपनी रचनाओं के कारण प्रसिद्धि पायी है, यश प्राप्त किया है। भारतीय मूर्तिकारों में रामकिंकर बैज राम सुतार ,चित्रकारों में मकबूल फिदा हुसेन , राजा रवि वर्मा आदि कलाकारोने भरपूर यश प्राप्त किया।

यश के साथ-साथ कवि / कलाकारों को धन प्राप्ति होती है। प्राचीन काल में राज दरबार में कवियों कलाकारों को आश्रय मिलता था। सम्राट अकबर के दरबार में नवरत्न थे जो विविध कलाओं में निपुण थे। उदा. नवरत्नों में तानसेन जो शास्त्रीय संगीत के महान ज्ञाता थे। फैजी फारसी कवि थे। कवि काव्य रचना करते थे और राजाओं को सुनाते थे। उसके बदले राजा कवियों को धन देता था। उस काल में कवि यदि राजा के धन संपत्ति पर निर्भर थे तो निश्चय ही कला अर्थ प्राप्ति का साधन थी।

8) कला उपदेश के लिए : --

'कला उपदेश के लिए' इस मत में केवल लोगों को उपदेश करने के लिए कवि / कलाकार रचना करता है। समाज में अनेक समस्या रहती है। जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह, अंधविश्वास आदि समस्याओं का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो और उनमें प्रबोधन हो इसलिए साहित्य रचना या कला का सृजन कवि या कलाकार करते थे और उनके जरिए समाज प्रबोधन करते है। लोगों को उपदेश देते है।

9) कला सृजन की अदम्य आवश्यकता के लिए : --

कला की मूल प्रेरणा आंतरिक ही है। कलाकर में हृदय का ओज उत्साह जो रस का रूप है उनको सृजन कार्य करने के लिए प्रवृत्त करता है। इसके बिना आत्माभिव्यक्ति की इच्छा जो बड़ी प्रबल होती है व्यर्थ हो जाती है। कलाकार कला का निर्माण तभी करता है जब भाव हृदय की संकुचित सीमा में सीमित न रहकर बाहर आने को छटपटा उठते हैं।